रात्रि क्लास 11/1/69 ओम शांति शिवबाबा याद है?

बेहद का बाप क्या आकर समझाते हैं; क्योंकि बाप टीचर रूप में भी जो बताते हैं वह समझाना पड़े। बाप अपना बनाते है, शिक्षा भी देते हैं, पवित्र भी बनाते है। राजाई पद पाने के लिये शिक्षा भी देते हैं। (तो) बाप सहज रिती अपना परिचय समझाते हैं। है भी बड़ा सहज। पहले बाप का परिचय औ बाप के वर्से का परिचय देना पड़ता है। आपेही समझ नहीं सकेंगे। बेहद के बाप से जरूर बेहद का वरसा मिलेगा। यह भी अच्छे .....वान ही समझेंगे। यह बेहद का वरसा है। बाप क्या वरसा देते होंगे। एक तो घर का भी वरसा देते होंगे। (राज)ाई का भी वरसा देते हैं। वह हुई स्वर्ग की बदशाही। तो पवित्र दैवी समप्रदाय बनने वाले हैं। राजधानी (में) आ सकते हो। बाकी डिनायस्टी कहा जाता है राजाई को। उसमें सभी नहीं आ सकते। जो जितना पढ़ेगा, पढ़ावेगा उतना ऊँचा पद पावेंगे। इतने बच्चे हैं बाप से वरसा लेते हैं। बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं और नर ना0 बनना फर्क हुआ ना। यह तो राजाई के मालिक हैं। वह बेहद का बाप है उनको स्वर्ग का रचयिता (कहें)गे। तो हम उनके बच्चे स्वर्ग की बादशाही लेंगे। यथा राजा..... जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद। (राज)ाई के लिये पुरूषार्थ तो राजाई पद पावेंगे। सतयुग की राजाई तो सभी को मिलनी नहीं है। जितना जो पुरूषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। पुरुषार्थ पर प्रारब्ध का मदार रहता है। यह तो बच्चे जानते है जितना पुरूषार्थ करेंगे। तुम जानते हो हम राजयोग सीखने आये हैं। तो पुरूषार्थ भी वह करेंगे। बादशाही किस प्रकार मिल सकती है उनसे कम पद कैसे मिलता है, वह भी समझते हो। बताया गया है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो तमोप्रधान से सतोप्रधान प्योर सोना बन जावेंगे। राजाई भी मिलेगी। जैसे यहाँ कहते हैं भारत के ...म मालिक हैं। मलिक तो सभी बनेंगे। फिर पद क्या पावेंगे? पढ़ाई है ना। गीता में पढ़ाई का नहीं दिखाया ..... , लड़ाई दिखाई है। तो क्या लड़ाई के बाद पढ़ेंगे? नहीं। पढ़ाई के बाद फिर हमारा पद स्वर्ग में रहेगा। अभी (सं)गम पर पढ़ते हो। सतयुग में राजाई करेंगे। बच्चे जानते हैं यह स्वर्ग के मालिक थे। गीता में भी है राजयोग। बाप योग भी सिखलाते हैं, पढ़ाते भी हैं। तुम समझते हो हम राजयोग सीखते हैं। बाप की याद से हम पावन भी बनते हैं। हमारा पुनर्जन्म रावण राज्य में नहीं। रामराज्य में होगा। पढ़ रहे हैं। समझते हैं पढ़ते–2 अगर कहाँ भूलकर दो, भूल जाते है ना। मनमनाभ् मध्याजीभव। बच्चे जानते हैं अभी कलयुग का अंत है, फिर सतयुग .... स्वर्ग जरूर आवेगा। राजयोग सीखते हैं तो स्वर्ग में जरूर आवेंगे। बाप संगमयुग पर ही आकर बेहद का स्कूल खोलते हैं। जहाँ बेहद की पढ़ाई है। बेहद विश्व की बादशाही पाने लिये। हद की बदशाही तो मिल सकती है। तुम अभी जानते हो हम अभी नई दुनिया के मालिक बनेंगे। नई दुनिया को स्वर्ग कहा जाता है। खुमारी चढ़ती है ना। बरोबर पुरानी दुनिया के बाद है नई दुनिया। बच्चों को याद आता है। पुरूषार्थ भी बच्चे करते है। नई दुनिया के लिये। जाते हैं स्वर्ग में। बच्चों को खुशी होती होगी ना। स्वर्ग की बदशाही माना ही स्वर्ग का मालिक बनना। सभी बच्चों के दिल में है स्वर्ग का मालिक बनने हमको परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। बच्चों को यह याद रहे हमको भगवान पढ़ाते हैं, ऊँच ते ऊँच बनाते हैं। ऊँच ते ऊँच सतयुग के राजा–रानी बनते हैं। बाप .... हम राजा–रानी बनेंगे। राजा–रानी बनने के लिये पुरूषार्थ किया जाता है। राजयोग द्वारा ही राजाई मिल सकती है। उसमें पवित्रता–सुख–शांति भी है। बेहद के बाप से बेहद की बदशाही मिलती है। बेहद की बदशाही .... ही जाता है सतयग को। इस बाबा में शिवबाबा पधारे हैं। वह है ऊँच ते ऊँच। पुरानी दुनिया सो फिर नई दुनिया जरूर स्थापन होनी है। स्वर्ग में एक ही राजधानी हाती है। समझ में आता है, बाकी यह सभी न रहें... जिस घर के होंगे वह वहाँ जाकर जरूर बैठेंगे। नम्बारवार सिजरा होता है ना। बुद्धि में है बरोबर सत(युगी) ल0 ना0 की राजाई थी। आत्मा अनुभव लेती जाती है। वहाँ जायेंगे तो वहाँ की बैठक ही ऊँची होगी। स्टूडेन्ट सभी की बैठक अपनी2 होगी। एक की जगह दूसरा नहीं बैठ सकता। एक का पार्ट दूसरे से नहीं मिल सकता। बाप ने समझाया है रिकार्ड भरा हुआ है। उस अनुसार ही पास होते हैं। समझते हो ड्रामा के प्लैन अनुसार हमारा पुरूषार्थ चलता है। कोई राजा, कोई रानी बनेंगे। अभी तुम बच्चों को समझ में आया है। तुमको

आत्मा आत्मा यह शरीर छोड़ेगी। फलाने की आत्मा। नाम फलाना का लेते हैं। आत्मा का नाम नहीं लेते। फलाने की (आत)मा इस समय ऊँच पद पा रही है। पुरूषार्थ की रिजल्ट निकलेगी जो फिर माला बनेगी। बाबा सबकुछ (सम)झावेंगे, दिखलावेंगे। कैसे यह राजयोग पढ़ रहे हैं। ऊँच नम्बर वाले को जरूर मालूम पड़ेगा। बच्चे जानते हैं ..... को पार्ट बजाना है। तुम्हारा नाम,रुप,देश काल यह होगा। एमऑबजेक्ट सामने खड़ी है। मरने के बाद ....झा जाता है आत्मा जाकर कर्मों अनुसार दूसरा शरीर लेगी। अच्छे कर्म वालों को अच्छा ही जन्म मिलेगा। योगबल ..... पुरूषार्थ न करते हैं तो कम पद पावेंगे। फीचर्स तो बदल जावेगा। फिर पहचान न सकेंगे। ऐसे2 विचार ..... से खुशी होगी। बाबा हमको पढ़ाते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। नामाचार भी पिछाड़ी को होगा। जो जैसा महारथी ....उनकी ऐसी महीमा होगी। भल एक कुल के हैं; परन्तु मुरली सभी के डिफरेंट चलेगी। एक जैसे हो नहीं (सक)ते। फीचर्स भी अलग होंगे। हरेक की मुरली अलग2, यह बना बनाया खेल है ना। अभी बच्चों का कर्मों पर ..... है। बाप या माँ जैसे करेंगे बच्चे सीखेंगे। इसलिए लाइफ में बच्चे जानते हैं कर्म अच्छे नहीं करते थे। .... कर्म सीख रहे हो। जानते हो हम कितना ऊँच पद पावेंगे। बच्चों की सर्विस से मालूम तो पड़ता है ना। महारथियों की मेहनत छिपी नहीं रहती है। समझ सकते हैं कौन ऊँच पद पाने मेहनत कर रहे हैं। सभी बच्चों को चांस भी मिलेगी। यहाँ भी म्युजियम आदि खुल जावेगा। बाप भी समझते हैं ऊँच पद पाना है वही ..... मनमनाभव् का देते हैं। अर्थ सहित। बच्चे समझते हैं हमे जो ज्ञान देते हैं वह है गीता का ज्ञान। वह शास्त्र पढ़कर .....ते हैं। यहां तो बाप खुद नॉलेजफुल है। वह तो एक्युरेट नॉलेज ही देंगे। फिर बच्चों की धारणा पर है जो सुनते .... वह प्रैक्टिकल में आता रहेगा। डिफिकल्ट नहीं है। बाप को याद करना और चक्र को जानना। यह है अंतिम ..... की पढ़ाई। पास कर हम नई दुनिया में चले जावेंगे। गायन है निश्चय में विजय। तो वही . .... जाकर तुम पावेंगे। प्रीत बुद्धि और विपरीत बुद्धि को बच्चों ने समझा है। भगवान पढ़ाते हैं। बच्चे जानते हैं शरीर आत्मा धारण करती है। नौकरी आत्मा करती है इस शरीर द्वारा। पढ़ती आत्मा है। यह समझने की बातें। .... बाप को याद करते हैं, फिर माया रावण बुद्धि का योग तोड़ देती है। माया से सावधान रहना है। जितना ..... जावेंगे उतना तुम्हारा प्रभाव भी निकलेगा और खुशी का पारा शो करेगा। नया जन्म लेंगे। तो बहुत शो (करें)गे। बच्चों ने सा0 भी किया है। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट।